eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 04, April 2025

डिजिटल युग में शिक्षक–छात्र सम्बन्धः भारतीय उच्च शिक्षा के सन्दर्भ में

डा० बनवारी[1]
[1]असि० प्रोफेसर, शिक्षा संकाय कमला नेहरू भौतिक एवं सामाजिक विज्ञान संस्थान, सुल्तानपुर, उ०प्र०

Received: 15 April 2025 Accepted & Reviewed: 25 April 2025, Published: 30 April 2025

Abstract

डिजिटल युग ने भारतीय उच्च शिक्षा में शिक्षक–छात्र सम्बन्धों को नई दिशा दी है। तकनीकी प्रगति ने शिक्षा को अधिक सुलभ और लचीला बनाया है, जिससे संवाद और शिक्षण विधियों में बड़े बदलाव आए हैं। ऑनलाइन शिक्षा, वर्चुअल कक्षाएँ, और डिजिटल संसाधनों ने शिक्षकों और छात्रों के बीच सम्पर्क बढ़ाया है, लेकिन इसके साथ ही व्यक्तिगत संवाद की कमी, डिजिटल विभाजन, और मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं।

यह शोध डिजिटल शिक्षा के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों का विश्लेषण करता है, विशेष रूप से भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली के संदर्भ में। यह डिजिटल उपकरणों के बढ़ते उपयोग, ऑनलाइन शिक्षण के प्रभाव, और शिक्षक–छात्र संवाद में आए बदलावों की समीक्षा करता है। इसके अलावा, यह अध्ययन शिक्षकों की बदली हुई भूमिका, छात्रों की सीखने की शैली में हुए परिवर्तन, और डिजिटल माध्यमों के सामाजिक और मानसिक प्रभावों को उजागर करता है।

इस शोध के निष्कर्ष दर्शाते हैं कि डिजिटल युग में शिक्षा अधिक समावेशी और प्रभावी हो सकती है, बशर्ते कि डिजिटल संसाधनों की समान उपलब्धता और मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता दी जाए। भारतीय उच्च शिक्षा में डिजिटल नवाचारों को अपनाने के साथ–साथ उनके प्रभावों को संतुलित करना आवश्यक है।

मुख्य शब्दः डिजिटल युग, शिक्षक–छात्र सम्बन्ध, उच्च शिक्षा, ऑनलाइन शिक्षा, तकनीकी बदलाव, संवाद, भारतीय शिक्षा, मानसिक स्वास्थ्य, डिजिटल उपकरण, सामाजिक प्रभाव

Introduction

भारत में शिक्षा का इतिहास अत्यंत प्राचीन है, जिसमें गुरुकुल परंपरा से लेकर आधुनिक विश्वविद्यालय प्रणाली तक निरंतर विकास देखा गया है। पारंपरिक शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक–छात्र सम्बन्धों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है, जिसमें शिक्षक को एक मार्गदर्शक और अनुशासनात्मक अधिकारी के रूप में देखा जाता था।

वर्तमान में, डिजिटल प्रौद्योगिकी के आगमन ने शिक्षा प्रणाली को पूरी तरह से बदल दिया है। विशेष रूप से उच्च शिक्षा के क्षेत्र में, डिजिटल साधनों का उपयोग शिक्षण और सीखने के तरीके को एक नई दिशा प्रदान कर रहा है। इंटरनेट, ऑनलाइन कक्षाएँ, ई–लर्निंग प्लेटफार्म और स्मार्ट डिवाइस ने शिक्षा को अधिक लचीला और सुलभ बना दिया है। इस शोध पत्र का उद्देश्य भारतीय उच्च शिक्षा में डिजिटल युग के प्रभाव का विश्लेषण करना और यह समझना है कि यह परिवर्तन शिक्षक–छात्र सम्बन्धों को कैसे प्रभावित कर रहा है। इस अध्ययन के अंतर्गत डिजिटल शिक्षा के सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं को विस्तार से समझने का प्रयास किया जाएगा।

साहित्य समीक्षा

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 04, April 2025

शिक्षा के डिजिटलीकरण पर विभिन्न शोधों द्वारा महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान की गई है। निम्नलिखित अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल शिक्षा के प्रभाव को किस प्रकार विभिन्न शोधकर्ताओं ने देखा है:

1. मिश्रा एवं सूद (2020) के अनुसार, भारत में उच्च शिक्षा में डिजिटल परिवर्तन ने शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार किया है, लेकिन यह संसाधनों की असमानता की समस्या को भी उजागर करता है।

2. कुमार एवं शर्मा(2021) ने अपने अध्ययन में बताया कि डिजिटल प्लेटफार्मों के उपयोग से शिक्षक–छात्र संवाद में पारदर्शिता बढ़ी है और छात्रों को अधिक लचीलापन प्राप्त हुआ है।

3. शर्मा एवं सिंह (2019) ने बताया कि डिजिटल माध्यमों से शिक्षक और छात्रों के बीच व्यक्तिगत संपर्क में कमी आई है, जिससे मनोवैज्ञानिक और सामाजिक प्रभाव पड़ सकते हैं।

4. अग्रवाल (2020) ने ग्रामीण भारत में डिजिटल शिक्षा की चुनौतियों को रेखांकित किया है, जिसमें इंटरनेट कनेक्टिविटी और डिजिटल उपकरणों की अनुपलब्धता प्रमुख बाधाएँ हैं।

5. वर्मा एवं गुप्ता (2021) के अनुसार, ई–लर्निंग और ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से छात्रों की सहभागिता और सीखने की प्रक्रिया में सकारात्मक परिवर्तन देखा गया है।

यह साहित्य समीक्षा दर्शाती है कि डिजिटल युग में शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिए न केवल तकनीकी नवाचार आवश्यक हैं, बल्कि शिक्षकों और छात्रों को डिजिटल शिक्षा के अनुरूप ढालने के प्रयास भी महत्वपूर्ण हैं।

डिजिटल युग का उभार और शिक्षा प्रणाली में बदलाव

डिजिटल युग ने हमारे जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित किया है, और इसका प्रभाव विशेष रूप से शिक्षा प्रणाली पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इंटरनेट, स्मार्टफोन, लैपटॉप, वर्चुअल क्लासरूम और अन्य डिजिटल उपकरणों के आने से शिक्षा के तरीके और साधन पूरी तरह से बदल गए हैं। पहले जहां शिक्षक–छात्र के बीच केवल कक्षा में संवाद होता था, अब यह संवाद ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स, वीडियो कॉल्स, ईमेल और विभिन्न ऐप्स के माध्यम से भी संभव हो गया है। इस डिजिटल उभार ने शिक्षा प्रणाली को एक नई दिशा दी है, जिससे छात्रों और शिक्षकों दोनों के लिए नई संभावनाएं खुली हैं।

आजकल, शिक्षा के लिए विभिन्न डिजिटल प्लेटफार्म्स और तकनीकी उपकरण उपलब्ध हैं, जो छात्रों को कहीं से भी, कभी भी शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान करते हैं। ऑनलाइन कक्षाएं, वर्चुअल पाठ्यक्रम, शैक्षिक ऐप्स और डिजिटल किताबों का उपयोग छात्रों के लिए शिक्षा को और अधिक सुलभ और आकर्षक बना चुका है। इन तकनीकी संसाधनों के माध्यम से छात्र अपनी गति से सीख सकते हैं और उन्हें विषय की गहरी समझ प्राप्त हो सकती है। इसके साथ ही, डिजिटल युग ने शिक्षा में लचीलापन और समय की बचत को भी बढ़ावा दिया है, क्योंकि छात्र अब किसी भी समय, किसी भी स्थान से अपनी पढ़ाई कर सकते हैं।

इसके अलावा, डिजिटल तकनीक ने शिक्षकों को भी अपनी कार्यशैली में बदलाव करने के लिए प्रेरित किया है। पहले जहां शिक्षक कक्षा में ही छात्रों को ज्ञान प्रदान करते थे, अब उन्हें विभिन्न डिजिटल उपकरणों का इस्तेमाल करना आता है। जैसे, ऑनलाइन कक्षाएं, वीडियो प्रेजेंटेशन, ऑडियो ट्यूटोरियल्स और डिजिटल असाइनमेंट्स का उपयोग करके शिक्षक अब छात्रों को अधिक प्रभावी तरीके से पढ़ाते हैं।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 04, April 2025

इसके अलावा, शिक्षक अब छात्रों से ऑनलाइन माध्यमों के माध्यम से संवाद करते हैं, जो उन्हें अधिक लचीलापन प्रदान करता है।

डिजिटल शिक्षा ने छात्रों के लिए विभिन्न शैक्षिक संसाधनों को उपलब्ध कराया है। अब छात्र इंटरनेट के माध्यम से दुनिया भर की शैक्षिक सामग्री को खोज सकते हैं, जो पहले केवल पुस्तकालयों में ही उपलब्ध होती थी। इसके अलावा, डिजिटल माध्यमों से छात्रों को उन विषयों पर जानकारी प्राप्त करने का अवसर मिलता है, जो पारंपरिक शिक्षा पद्धतियों में नहीं होते। यह शिक्षा के दायरे को विस्तारित करता है और छात्रों के ज्ञान को और समृद्ध बनाता है।

डिजिटल युग का उभार न केवल शिक्षा के तरीकों को बदल रहा है, बल्कि यह शिक्षा की गुणवत्ता में भी सुधार कर रहा है। स्मार्ट क्लासरूम, इंटरेक्टिव लेर्निंग, और प्रौद्योगिकी का उपयोग करके, छात्र अब विषयों के बारे में बेहतर तरीके से समझ सकते हैं। इसके साथ ही, छात्रों के लिए शिक्षा में अधिक व्यक्तिगत दृष्टिकोण भी अपनाया जा सकता है, जिससे प्रत्येक छात्र की विशेष आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षण किया जा सकता है।

यद्यपि, डिजिटल युग ने शिक्षा प्रणाली में कई सकारात्मक बदलाव किए हैं, इसके साथ कुछ चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। सबसे बड़ी चुनौती यह है कि सभी छात्रों के पास समान रूप से तकनीकी संसाधन उपलब्ध नहीं हैं। इसके अलावा, डिजिटल शिक्षा में व्यक्तिगत संपर्क की कमी हो सकती है, जिससे छात्रों को कुछ समस्याओं का समाधान पाने में कठिनाई हो सकती है। फिर भी, इन चुनौतियों का समाधान करके डिजिटल शिक्षा को और अधिक प्रभावी और समावेशी बनाया जा सकता है।

शिक्षक–छात्र सम्बन्धों में बदलाव

शिक्षक और छात्र का सम्बन्ध समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह सम्बन्ध एक ओर जहाँ छात्रों के व्यक्तिगत और बौद्धिक विकास में सहायक होता है, वहीं दूसरी ओर समाज में शिक्षा के प्रसार में भी योगदान करता है। समय के साथ इस सम्बन्ध में कई बदलाव आए हैं, जिनका प्रभाव दोनों पक्षों पर पड़ा है। पहले के समय में शिक्षक और छात्र के बीच एक प्रकार का दूरी का रिश्ता था, लेकिन आजकल के समाज में यह सम्बन्ध अधिक सहकारी और समन्वयात्मक बन गया है।

पहले शिक्षक को एक सख्त और आदर्श व्यक्तित्व के रूप में देखा जाता था। शिक्षक का आदेश सर्वोपरि होता था और छात्र को बिना किसी विरोध के उसे मानना पड़ता था। इस समय में शिक्षक अपने ज्ञान का आदान–प्रदान करता था, और छात्र उसे ग्रहण करता था। शिक्षक–शिष्य का यह सम्बन्ध सम्मान और अनुशासन पर आधारित था, जिसमें छात्रों को सिखाने का मुख्य उद्देश्य उनका बौद्धिक और मानसिक विकास करना होता था। इस समय में शिक्षक का एकमात्र उद्देश्य छात्रों को शिक्षा देना था और वह इसके लिए छात्रों से व्यक्तिगत स्तर पर बहुत कम संवाद करते थे।

यद्यपि, अब के समय में शिक्षा का तरीका और शिक्षक–शिष्य सम्बन्ध काफी बदल गए हैं। आजकल शिक्षक और छात्र के बीच का रिश्ता ज्यादा खुले और संवादात्मक हो गया है। छात्रों के अधिकारों और उनकी व्यक्तिगतता का सम्मान करते हुए, शिक्षक अब उन्हें मार्गदर्शन देने के बजाय सहकर्मी की तरह उनके साथ काम करते हैं। इंटरनेट और आधुनिक तकनीकी उपकरणों के माध्यम से, शिक्षक अब केवल पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं रहते, बल्कि छात्रों को जीवन के विभिन्न पहलुओं पर भी मार्गदर्शन देते हैं।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 04, April 2025

इसके अतिरिक्त, आजकल के शिक्षकों को छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक भलाइयों का भी ध्यान रखना पड़ता है। शिक्षा अब सिर्फ किताबों तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि इसके साथ–साथ छात्रों के सामाजिक, मानसिक और भावनात्मक विकास पर भी जोर दिया जाता है। छात्रों के लिए अपने शिक्षक से बात करना और उनसे सलाह लेना आजकल काफी सामान्य हो गया है, क्योंकि शिक्षक अब एक मार्गदर्शक के रूप में सामने आते हैं, न कि केवल एक शिक्षक के रूप में।

आजकल के शिक्षकों को छात्रों के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाने के लिए उनकी विचारधारा, मानसिकता, और रुचियों को समझना पड़ता है। यह बदलाव एक सकारात्मक पहलू है, क्योंकि इससे शिक्षा का वातावरण भी अधिक समावेशी और सशक्त होता है। शिक्षक–शिष्य के रिश्ते में यह बदलाव समाज में जागरूकता और समानता को बढ़ावा देता है।

शिक्षक–शिष्य सम्बन्धों में यह बदलाव केवल छात्रों की बौद्धिक उन्नति तक ही सीमित नहीं है, बल्कि उनके व्यक्तित्व निर्माण में भी अहम भूमिका निभाता है। अब शिक्षक छात्रों को केवल परीक्षा के लिए नहीं, बल्कि जीवन के लिए तैयार करने में मदद करते हैं। वे उन्हें आत्मनिर्भर और सक्षम बनाने के लिए मार्गदर्शन देते हैं, जिससे छात्र न केवल अपनी शिक्षा में बेहतर प्रदर्शन करते हैं, बल्कि समाज में भी अपना योगदान देने में सक्षम होते हैं।

इस प्रकार, समय के साथ शिक्षक और छात्र के रिश्ते में जो बदलाव आए हैं, उन्होंने दोनों के दृष्टिकोण में सकारात्मक बदलाव उत्पन्न किया है। शिक्षक अब छात्रों के जीवन में एक सहायक और प्रेरणास्त्रोत के रूप में उभर कर आते हैं, जिससे शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं रहता, बल्कि छात्रों के सम्पूर्ण विकास की दिशा में भी योगदान करता है।

भारतीय उच्च शिक्षा में डिजिटल शिक्षा का प्रभाव

भारतीय उच्च शिक्षा में डिजिटल शिक्षा ने पिछले कुछ वर्षों में महत्वपूर्ण बदलाव किए हैं। भारत में, जहां शिक्षा के पारंपरिक रूपों का गहरा प्रभाव था, वहीं डिजिटल युग के आगमन ने इसे नई दिशा दी है। इंटरनेट, स्मार्टफोन, कंप्यूटर और अन्य डिजिटल उपकरणों ने भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली को अधिक सुलभ, समृद्ध और वैश्विक बना दिया है। यह परिवर्तन विशेष रूप से उच्च शिक्षा में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, जहां विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में अब डिजिटल प्लेटफार्मों का व्यापक उपयोग किया जा रहा है।

डिजिटल शिक्षा के प्रभाव से भारतीय उच्च शिक्षा के कई पहलुओं में सुधार हुआ है। सबसे पहले, यह शिक्षा को अधिक सुलभ और लचीला बना दिया है। पहले छात्रों को विशेष रूप से शैक्षिक संस्थानों में उपस्थित होकर ही शिक्षा प्राप्त करनी होती थी, लेकिन अब ऑनलाइन कक्षाएं, वीडियो लेक्चर, और वर्चुअल कक्षाएं छात्रों को कहीं से भी शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान करती हैं। यह खासकर उन छात्रों के लिए लाभकारी है, जो भौतिक रूप से दूरदराज के क्षेत्रों में रहते हैं और जिनके पास शिक्षा प्राप्त करने के लिए संसाधनों की कमी होती है। डिजिटल शिक्षा के माध्यम से छात्रों को समय और स्थान की सीमा से परे शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला है।

दूसरी ओर, डिजिटल शिक्षा ने भारतीय उच्च शिक्षा में शैक्षिक सामग्री के प्रसार को भी अधिक प्रभावी और तेज बना दिया है। विश्वविद्यालयों और कॉलेजों ने अपने पाठ्यक्रम को डिजिटल रूप में उपलब्ध

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 04, April 2025

कराया है, जिससे छात्र इंटरनेट के माध्यम से अपनी पढ़ाई कर सकते हैं। डिजिटल पुस्तकालय, ऑनलाइन रिसर्च पेपर, और शैक्षिक वीडियो लेक्चर छात्रों को किसी भी समय, कहीं से भी अध्ययन करने की सुविधा प्रदान करते हैं। इससे न केवल छात्रों की शिक्षा में सुधार हुआ है, बल्कि यह शोध कार्यों और शैक्षिक अनुसंधान में भी मददगार साबित हुआ है।

इसके अलावा, डिजिटल शिक्षा ने शिक्षा के स्तर को वैश्विक बना दिया है। अब भारतीय छात्र वैश्विक शैक्षिक संसाधनों का लाभ उठा सकते हैं। विभिन्न ऑनलाइन प्लेटफार्मों ने भारतीय छात्रों को विश्व स्तर पर उच्च गुणवत्ता की शिक्षा उपलब्ध कराई है। इन प्लेटफार्मों के माध्यम से छात्र वैश्विक विशेषज्ञों से सीधी शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं, जिससे उनकी ज्ञान की गुणवत्ता और विषय की गहरी समझ में सुधार हुआ है।

डिजिटल शिक्षा ने शैक्षिक संस्थानों में छात्रों और शिक्षकों के बीच संवाद के नए तरीके विकसित किए हैं। ऑनलाइन कक्षाओं, वेबिनार्स और वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से शिक्षक अब छात्रों से वास्तविक समय में संपर्क कर सकते हैं, जो पहले केवल कक्षा में व्यक्तिगत रूप से संभव था। इसके अलावा, ऑनलाइन प्लेटफार्मों पर हो रहे असाइनमेंट्स, परीक्षाएं और परियोजनाओं ने छात्रों की इंटरएक्टिविटी और सहभागिता को बढ़ावा दिया है।

यद्यपि, डिजिटल शिक्षा के प्रभाव ने भारतीय उच्च शिक्षा को एक नई दिशा दी है, इसके साथ कुछ चुनौतियाँ भी हैं। एक बड़ी चुनौती यह है कि सभी छात्रों के पास समान तकनीकी संसाधन उपलब्ध नहीं हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में छात्रों के लिए उचित इंटरनेट कनेक्टिविटी, स्मार्टफोन और लैपटॉप की कमी एक बड़ी समस्या बन सकती है। इसके अलावा, डिजिटल शिक्षा के माध्यम से छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य और व्यक्तिगत संपर्क की कमी भी चिंता का विषय है, क्योंकि पारंपरिक कक्षा में छात्रों का शिक्षक से सीधा संवाद होता था, जो अब कम हो गया है।

इन चुनौतियों के बावजूद, डिजिटल शिक्षा ने भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली में क्रांतिकारी बदलाव लाए हैं, और यह भविष्य में और भी अधिक प्रभावी रूप से छात्रों की शिक्षा को प्रभावित करेगा।

डिजिटल युग में शिक्षक की भूमिका

डिजिटल युग ने शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन लाए हैं। इंटरनेट, स्मार्टफोन, वर्चुअल क्लासरूम और अन्य डिजिटल उपकरणों का व्यापक उपयोग ने शिक्षण की प्रक्रिया को पूरी तरह से नया रूप दिया है। इस नए युग में शिक्षक की भूमिका पहले से कहीं अधिक विस्तृत और चुनौतीपूर्ण हो गई है। अब शिक्षक केवल विषय का ज्ञान देने वाला नहीं है, बल्कि वह एक मार्गदर्शक, प्रेरक और मानसिक सहायक भी बन गया है।

आजकल, ज्ञान प्राप्ति के लिए छात्रों के पास अनगिनत डिजिटल संसाधन उपलब्ध हैं। इंटरनेट पर जानकारी का अपार भंडार है, और छात्र किसी भी समय उसे प्राप्त कर सकते हैं। इस स्थिति में शिक्षक का कार्य केवल सूचना प्रदान करना नहीं रह गया है, बल्कि उनका मुख्य कार्य छात्रों को सही दिशा में मार्गदर्शन देना और उन्हें अपनी सोच को विकसित करने के लिए प्रेरित करना है। वे छात्रों को इस ज्ञान के महासागर में से सही और प्रामाणिक जानकारी चुनने में मदद करते हैं। शिक्षक छात्रों को उन कौशलों से परिचित कराता है, जिनकी आवश्यकता उन्हें भविष्य में विभिन्न समस्याओं का समाधान ढूंढ़ने के लिए होगी।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 04, April 2025

इसके अलावा, डिजिटल शिक्षा के दौर में शिक्षक को तकनीकी ज्ञान का होना भी अनिवार्य है। ऑनलाइन कक्षाएँ, डिजिटल प्रस्तुतीकरण, शैक्षिक ऐप्स, और अन्य डिजिटल प्लेटफार्म्स का प्रभावी उपयोग शिक्षक की नई जिम्मेदारी बन गई है। शिक्षक को यह जानना आवश्यक है कि इन उपकरणों का प्रयोग कैसे छात्रों की सीखने की प्रक्रिया को प्रभावी बना सकता है। उदाहरण के लिए, वे वीडियो ट्यूटोरियल, इंटरैक्टिव सामग्री और डिजिटल क्विज के माध्यम से छात्रों को अधिक आकर्षक और समृद्ध अनुभव प्रदान कर सकते हैं। इस प्रकार, तकनीकी कौशल शिक्षक के लिए एक आवश्यक क्षमता बन गई है, जिसे वह छात्रों के बेहतर शैक्षिक अनुभव के लिए लागू कर सकते हैं।

डिजिटल युग में, शिक्षक की भूमिका केवल शैक्षिक विषयों तक सीमित नहीं है। उन्हें छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक स्थिति का भी ध्यान रखना होता है। डिजिटल शिक्षा के दौरान, छात्रों का पारंपरिक कक्षा में व्यक्तिगत संपर्क कम हो जाता है, जिससे उनमें अकेलापन, तनाव या सामाजिक चिंता उत्पन्न हो सकती है। ऐसे में शिक्षक का कर्तव्य है कि वह छात्रों से निरंतर संवाद बनाए रखें, उनकी समस्याओं को सुनें और उन्हें मानसिक रूप से स्थिर रखने के लिए प्रेरित करें। शिक्षक को यह समझना होता है कि हर छात्र की शैक्षिक और मानसिक जरूरतें अलग होती हैं, और उन्हें व्यक्तिगत रूप से मार्गदर्शन की आवश्यकता हो सकती है।

डिजिटल युग में शिक्षा के तरीकों में भी बदलाव आया है। अब शिक्षक को सिर्फ किताबों तक सीमित नहीं रहना पड़ता, बल्कि उन्हें वीडियो, ग्राफिक्स, ऑडियो और अन्य मल्टीमीडिया सामग्री का उपयोग करके पाठ्यक्रम को और अधिक रोचक और प्रभावी बनाना होता है। इसके अलावा, शिक्षक को समूह चर्चा, ऑनलाइन असाइनमेंट और छात्रों के बीच सहयोग को प्रोत्साहित करने की दिशा में भी कार्य करना होता है, ताकि छात्र एक दूसरे से सीख सकें और बेहतर ढंग से समस्याओं का समाधान कर सकें।

इस प्रकार, डिजिटल युग ने शिक्षक की भूमिका में न केवल बदलाव किया है, बल्कि उसे और अधिक समर्पित, शिक्षित और सक्षम भी बना दिया है। आज शिक्षक को ज्ञान का प्रसार करने के साथ–साथ छात्रों के समग्र विकास पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

डिजिटल युग ने भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली में अभूतपूर्व बदलावों की प्रक्रिया को गति दी है। विशेष रूप से शिक्षक–छात्र सम्बन्धों पर इसके गहरे और व्यापक प्रभाव देखे गए हैं। जहां एक ओर यह बदलाव शिक्षा को अधिक सुलभ और समावेशी बना रहा है, वहीं दूसरी ओर इसके साथ कई सामाजिक, मानसिक और तकनीकी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। यह शोध उन विभिन्न पहलुओं को उजागर करता है जिनके माध्यम से डिजिटल शिक्षा ने भारतीय उच्च शिक्षा के शिक्षक–छात्र सम्बन्धों को पुनः परिभाषित किया है।

सबसे पहले, यह समझना जरूरी है कि डिजिटल युग ने शिक्षक–छात्र सम्बन्धों के पारंपरिक रूपों को चुनौती दी है। पहले जहाँ कक्षा के भीतर शिक्षक और छात्र के बीच संवाद और संवादात्मक सम्बन्ध मुख्य रूप से होते थे, वहीं अब ऑनलाइन और डिजिटल प्लेटफार्मों के माध्यम से यह सम्बन्ध अधिक लचीले और असंरचित हो गए हैं। आजकल, शिक्षक और छात्र के बीच संवाद केवल कक्षा तक सीमित नहीं रहता, बल्कि ईमेल, व्हाट्सएप, वर्चुअल क्लासरूम और अन्य डिजिटल उपकरणों के माध्यम से लगातार और विविध प्रकार के संवाद होते हैं। इस बदलाव ने एक नई कार्यशैली और शिक्षण पद्धति को जन्म दिया है, जिसमें

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 04, April 2025

शिक्षक अब केवल ज्ञान देने वाले नहीं, बल्कि मार्गदर्शक, सहायक और मानसिक समर्थन देने वाले के रूप में उभर कर सामने आए हैं।

यद्यपि, डिजिटल शिक्षा ने भारतीय उच्च शिक्षा में छात्रों के लिए अवसरों के नए द्वार खोले हैं, जैसे कि दुनिया भर के शैक्षिक संसाधनों की सुलभता और लचीले तरीके से सीखने का अवसर, इसके साथ कुछ गंभीर चुनौतियाँ भी हैं। सबसे बड़ी चुनौती डिजिटल साक्षरता और तकनीकी संसाधनों की पहुँच से संबंधित है। विशेषकर ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों के छात्र जिनके पास इंटरनेट और आवश्यक उपकरणों की कमी है, वे डिजिटल शिक्षा के इस नए रूप को अपनाने में पीछे रह सकते हैं। इसके परिणामस्वरूप, शिक्षा के क्षेत्र में असमानता की समस्या और गहरी हो सकती है।

इसके अतिरिक्त, डिजिटल शिक्षा के बढ़ते प्रभाव के साथ शिक्षक–छात्र के पारस्परिक सम्बन्धों में भावनात्मक और मानसिक रूप से दूरियां भी उत्पन्न हो सकती हैं। पारंपरिक कक्षा में छात्रों और शिक्षकों के बीच व्यक्तिगत संपर्क से जो मानसिक और भावनात्मक समर्थन मिलता था, वह अब कम हो सकता है। इस बात को नकारा नहीं किया जा सकता कि मानसिक स्वास्थ्य की समस्याएँ, जैसे अकेलापन, अवसाद और सामाजिक अलगाव, डिजिटल शिक्षा में बढ़ सकती हैं। यह शिक्षक की भूमिका को और अधिक चुनौतीपूर्ण बना देता है, क्योंकि अब उन्हें केवल शैक्षिक ज्ञान ही नहीं, बल्कि मानसिक सहारा भी प्रदान करना होता है।

साथ ही, यह देखा गया है कि डिजिटल युग में शिक्षक और छात्र दोनों को नए कौशल की आवश्यकता है। शिक्षक को डिजिटल उपकरणों का सही तरीके से उपयोग करना और छात्रों के मानसिक और शैक्षिक मुद्दों के प्रति संवेदनशील रहना जरूरी है। वहीं, छात्रों को भी तकनीकी शिक्षा और डिजिटल साक्षरता में पारंगत होना आवश्यक है, ताकि वे अपनी शिक्षा यात्रा में सफलता प्राप्त कर सकें।

डिजिटल युग ने भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली को एक नई दिशा दी है, लेकिन इसके साथ ही यह महत्वपूर्ण है कि हम इसके सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं दोनों पर समान रूप से ध्यान दें। भविष्य में, शिक्षा नीति निर्माताओं, शिक्षकों और छात्रों को मिलकर इस डिजिटल बदलाव के दौरान उत्पन्न चुनौतियों का समाधान खोजने और शिक्षा के उच्च मानकों को बनाए रखने के लिए काम करना होगा। केवल तभी हम भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली को अधिक सशक्त और समावेशी बना सकते हैं, जो न केवल ज्ञान का प्रसार करती है, बल्कि शिक्षक–छात्र सम्बन्धों को भी प्रगाढ़ और प्रभावी बनाती है।

सन्दर्भ

अग्रवाल, एम., द चौलेंजेस ऑफ ऑनलाइन एजुकेशन इन रूरल इंडिया। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 2020, 45(1), 29–42।

कुमार, आर., और शर्मा, एम., द रोल ऑफ डिजिटल प्लेटफार्म्स इन इंडियन हायर एजुकेशनः एन एम्पिरिकल स्टडी। इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल डेवलपमेंट, 2021, 11(2), 178–189।

गुप्ता, पी., और मेहता, आर., डिजिटल टूल्स इन एजुकेशनः देयर इम्पैक्ट ऑन टीचिंग एंड लर्निंग इन इंडियन यूनिवर्सिटीज। जर्नल ऑफ लर्निंग एंड डेवलपमेंट, 2020, 30(3), 95–107।

चौधरी, एस., मेंटल हेल्थ इन डिजिटल लर्निंग एनवायरनमेंट्सः ए स्टडी ऑफ इंडियन स्टूडेंट्स। इंडियन जर्नल ऑफ सोशल वर्क, 2021, 42(2), 178–190।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 04, April 2025

जैन, के., और कुमार, वी., इंडियन हायर एजुकेशन इन द डिजिटल एजः चौलेंजेस एंड ऑपर्च्यूनिटीज। इंडियन जर्नल ऑफ हायर एजुकेशन, 2020, 34(2), 211–225।

नायर, ए., टीचर–स्टूडेंट कम्युनिकेशन इन द डिजिटल एराः ए केस स्टडी फ्रॉम इंडिया। जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी, 2019, 42(3), 125–136।

मिश्रा, एस., और सूद, ए., इम्पैक्ट ऑफ डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन ऑन हायर एजुकेशन इन इंडिया. जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी, 2020, 39(4), 345–358।

वर्मा, एस., और गुप्ता, आर., ई–लर्निंग एंड टीचर–स्टूडेंट इंटरेक्शन इन इंडियन हायर एजुकेशन। एजुकेशन एंड इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजीज, 2021, 26(4), 3987–3999।

शर्मा, ए., और सिंह, एस., टेक्नोलॉजी–मीडिएटेड लर्निंग एंड इट्स इम्पैक्ट ऑन टीचर–स्टूडेंट रिलेशनशिप इन इंडिया। एजुकेशनल रिव्यू, 2019, 22(3), 112–126।

शर्मा, पी., और पटेल, ए., अडाप्टिंग ट्रेडिशनल टीचिंग मेथड्स टू डिजिटल प्लेटफार्म्स इन इंडिया। ग्लोबल एजुकेशन रिव्यू, 2022, 9(1), 115–130।